देवनागरी उर्दू

हज़रत ईसा अल-मसीह का पाँचवा हुक्म, जाओ और तमाम कौमों को शागिर्द बनाओ।

हज़रत ईसा अल-मसीह का पाँचवा हुक्म, जाओ और तमाम कौमों को शागिर्द बनाओ।

ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह पर ईमान रखने वाले हर एक शख्स की ज़िम्मेदारी है कि वह दूसरों को खुशखबरी सुनायें ताकि वे भी शागिर्द बन सकें। जब खुदावन्द ईसा अल-मसीह ने हमारे गुनाहों के लिए सलीब पर अपनी जान कुरबान की, और फिर उन्हें दफ़्न किया गया और तीसरे दिन वो ज़िन्दा हुए—तो उन्होंने अपने शागिर्दों को हुक्म दिया:

“'इसलिए जाओ, तमाम क़ौमों को शागिर्द बनाकर उन्हें बाप, फ़रज़ंद और रूहुल-क़ुद्स के नाम से बपतिस्मा दो।” (मत्ती 28:19)

इस हुक्म का मतलब है कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह दुनियाँ के हर मुल्क, हर बिरादरी और हर क़ौम के लोगों से मुहब्बत करते हैं, और चाहते हैं कि हर इंसान उनका शागिर्द बनें। अब जब आप ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह पर ईमान ला चुके हैं, तो वह आपको भी इस्तेमाल करना चाहते हैं, ताकि आप भी दूसरों को उनका शागिर्द बना सकें।

सबक शुरू करने से पहले मैं आप से एक सवाल पूछना चाहता हूँ। आपको क्या लगता है कि ख़ुदा किन लोगों को इस्तेमाल करना चाहता है, ताकि वे दूसरों की मदद करें कि कैसे वे हज़रत ईसा अल-मसीह का रास्ता अपनाएँ? अगर आप समझते हैं कि ख़ुदा सिर्फ़ बहुत पढ़े-लिखे, या बहुत नेक लोगों को ही इस्तेमाल करेगा, तो आज का सबक आपको हैरान कर देगा। क्योंकि ख़ुदा आम और सादे लोगों को भी बड़े कामों के लिए इस्तेमाल करता है।

आज का सबक लंबा है, इसलिए हम इसे हिस्सों में समझेंगे।

सबक शुरू करने से पहले, हमें बनी इस्राईल के बारे में जानना चाहिए। इस्राईल हज़रत याक़ूब अलैयहिस्सलाम का एक नाम था। इसलिए बनी इस्राईल वही क़ौम थी जो हज़रत याक़ूब अलैयहिस्सलाम की औलाद से आई। ये लोग हज़रत मूसा अलैयहिस्सलाम की तालीमात और तौरात शरीफ़ को मानते थे। ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के ज़माने में बनी इस्राईल वालों को अक्सर “यहूदी” कहा जाता था। “यहूदी” नाम हज़रत याक़ूब अलैयहिस्सलाम के बेटे यहूदा से आया है।

आज का सबक हम युहन्ना की इंजील 4 बाब आयात 5-30 और फिर 39 - 42 तक से पढ़ेंगे। उस वक्त खुदावन्द ईसा अल-मसीह सामरिया के इलाके में थे।

ईसा सामरिया से गुज़र रहा था। चलते-चलते वह एक शहर के पास पहुँच गया जिसका नाम सूख़ार था। यह उस ज़मीन के क़रीब था जो याक़ूब ने अपने बेटे यूसुफ़ को दी थी।

6वहाँ याक़ूब का कुआँ था। ईसा सफ़र से थक गया था, इसलिए वह कुएँ पर बैठ गया। दोपहर के तक़रीबन बारह बज गए थे।

www.taleemulkalam.org

एक सामरी औरत पानी भरने आई। ईसा ने उससे कहा, "मुझे ज़रा पानी पिला।" 8(उसके शागिर्द खाना ख़रीदने के लिए शहर गए हुए थे।)

9सामरी औरत ने ताज्जुब किया, क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ ताल्लुक़ रखने से इनकार करते हैं। उसने कहा, "आप तो यहूदी हैं, और मैं सामरी औरत हूँ। आप किस तरह मुझसे पानी पिलाने की दरख़ास्त कर सकते हैं?"

हमारे ख़ुदावंद ईसा अल–मसीह अपनी खिदमत के दौर में हर वक़्त सफ़र करते रहते थे और ख़ुदा का कलाम लोगों तक पहुँचाते थे। उस ज़माने में दो क़ौमें आपस में नाराज़ और एक–दूसरे से अलग–थलग रहती थीं — **बनी इस्राईल** और **सामरियों** की क़ौम।

इन दोनों क़ौमों की **ज़बान, पहनावा, खाना पीना, और मज़हब** अलग–अलग थे। यही वजह थी कि ज़्यादातर यहूदी और सामरी लोग आपस में बात भी नहीं करते थे। लेकिन खुदावंद ईसा अल–मसीह सब इंसानों से मुहब्बत करते थे। इसी लिए, बनी इस्राईल से होने के बावजूद भी, वो सामरियों के पास भी खुशी–खुशी गए।

आपको ये बात अच्छी तरह मालूम होनी चाहिए कि ख़ुदावंद ईसा अल–मसीह की खिदमत सिर्फ़ एक क़ौम या एक मुल्क के लिए नहीं थी। उनकी खिदमत **पूरी दुनियाँ** के लोगों के लिए थी — हर ज़बान, हर क़ौम और हर इलाक़े के लिए।

10ईसा ने जवाब दिया, "अगर तू उस बख़्शिश से वाक़िफ़ होती जो अल्लाह तुझको देना चाहता है और तू उसे जानती जो तुझसे पानी माँग रहा है तो तू उससे माँगती और वह तुझे ज़िंदगी का पानी देता।"

11ख़ातून ने कहा, "ख़ुदावंद, आपके पास तो बालटी नहीं है और यह कुआँ गहरा है। आपको ज़िंदगी का यह पानी कहाँ से मिला?

12क्या आप हमारे बाप याक़ूब से बड़े हैं जिसने हमें यह कुआँ दिया और जो ख़ुद भी अपने बेटों और रेवड़ों समेत उसके पानी से लुत्फ़अंदोज़ हुआ?"

13ईसा ने जवाब दिया, "जो भी इस पानी में से पिए उसे दुबारा प्यास लगेगी। 14लेकिन जिसे मैं पानी पिला दूँ उसे बाद में कभी भी प्यास नहीं लगेगी। बल्कि जो पानी मैं उसे दूँगा वह उसमें एक चश्मा बन जाएगा जिससे पानी फूटकर अबदी ज़िंदगी मुहैया करेगा।"

ख़ुदावंद ईसा अल–मसीह ने बातचीत को फौरन रूहानी बातों की तरफ मोड़ दिया। उन्होंने उस औरत से कहा कि **वो उसे "ज़िन्दगी का पानी" दे सकते हैं।** उन्होंने फरमाया कि **जो भी इस ज़िन्दगी के पानी को पिएगा, उसे फिर कभी प्यास नहीं लगेगी**, बल्कि उसके अंदर एक ऐसा सोता यानी चश्मा फूट पड़ेगा *जो उसे हमेशा की ज़िन्दगी यानी अबदी ज़िन्दगी देता रहेगा।*

बेशक, ख़ुदावंद ईसा अल–मसीह ने यहाँ एक **मिसाल** का इस्तेमाल किया था ताकि नजात की हकीकत को समझाया जाए। उनका मतलब ये था कि **जो भी उनके पास आएगा, वो उसे रूहुल क़ुद्स और अबदी ज़िन्दगी अता करेंगे।**

लेकिन वो औरत ईसा अल–मसीह की इन रूहानी बातों को नहीं समझ सकी। उसे ये बातें सिर्फ़ ज़ाहिरी तौर पर पानी की बातें लगीं — जबकि असल में ईसा अल–मसीह उसके दिल की प्यास और रूह की ज़रूरत की बात कर रहे थे।

www.telemukalam.org

15औरत ने उससे कहा, "ख़ुदावंद, मुझे यह पानी पिला दें। फिर मुझे कभी भी प्यास नहीं लगेगी और मुझे बार बार यहाँ आकर पानी भरना नहीं पड़ेगा।"

16ईसा ने कहा, "जा, अपने ख़ाविंद को बुला ला।"

17औरत ने जवाब दिया, "मेरा कोई ख़ाविंद नहीं है।" ईसा ने कहा, "तूने सहीह कहा कि मेरा ख़ाविंद नहीं है,

18क्योंकि तेरी शादी पाँच मर्दों से हो चुकी है और जिस आदमी के साथ तू अब रह रही है वह तेरा शौहर नहीं है। तेरी बात बिलकुल दुरुस्त है।"

19औरत ने कहा, "ख़ुदावंद, मैं देखती हूँ कि आप नबी हैं। 20हमारे बापदादा तो इसी पहाड़ पर इबादत करते थे जबकि आप यहूदी लोग इसरार करते हैं कि यरूशलम वह मरकज़ है जहाँ हमें इबादत करनी है।"

उस औरत ने ख़ुदावंद ईसा अल–मसीह से कहा कि वो उसे ये "ज़िन्दगी का पानी" अता करदें। मगर वो अभी भी इन बातों का **रूहानी मतलब** नहीं समझ पा रही थी। ज़िन्दगी का पानी हासिल करने से पहले, उसके **गुनाह** को ज़ाहिर करना और उसका हल करना ज़रूरी था।

इसलिए, ख़ुदावंद ईसा अल–मसीह ने उससे कहा कि **अपने शौहर को बुला लाओ।** इस तरह उन्होंने, उसके **ज़िना** के गुनाह को सामने ला दिया। फिर उन्होंने उसे बता दिया कि उन्हें पहले से पता था कि उसका माज़ी गुनाह से भरा है, और उसका कोई शौहर नहीं है। इस औरत के लिए ये बात बहुत हैरान कर देने वाली रही होगी, कि ख़ुदावंद **ईसा अल–मसीह उसके गुनाह जानते हुए भी उससे बात कर रहे थे।** फिर भी उन्होंने उसकी तौहीन नहीं की, बल्कि प्यार और रहमत से उससे बात की। ये बातें सुनकर उस औरत को समझ आ गया कि ख़ुदावंद **ईसा अल–मसीह एक नबी हैं।** फौरन उसने पूछा कि **इंसान ख़ुदा के क़रीब कैसे हो सकता है?** वो ये सोच रही थी कि क्या उसे सामरियों के तरीके से इबादत करनी चाहिए या बनी इस्राईल के तरीके से।

इसके जवाब में ख़ुदावंद ईसा अल–मसीह ने उसे यह हकीकत बताई

21ईसा ने जवाब दिया, "ऐ ख़ातून, यक़ीन जान कि वह वक़्त आएगा जब तुम न तो इस पहाड़ पर बाप की इबादत करोगे, न यरूशलम में। 22तुम सामरी उस की परस्तिश करते हो जिसे नहीं जानते। इसके मुक़ाबले में हम उस की परस्तिश करते हैं जिसे जानते हैं, क्योंकि नजात यहूदियों में से है। 23लेकिन वह वक़्त आ रहा है बल्कि पहुँच चुका है जब हक़ीक़ी परस्तार रूह और सच्चाई से बाप की परस्तिश करेंगे, क्योंकि बाप ऐसे ही परस्तार चाहता है। 24अल्लाह रूह है, इसलिए लाज़िम है कि उसके परस्तार रूह और सच्चाई से उस की परस्तिश करें।"

25औरत ने उससे कहा, "मुझे मालूम है कि मसीह यानी मसह किया हुआ शख़्स आ रहा है। जब वह आएगा तो हमें सब कुछ बता देगा।"

26इस पर ईसा ने उसे बताया, "मैं ही मसीह हूँ जो तेरे साथ बात कर रहा हूँ।"

यह गुनहगार औरत ख़ुदा की इबादत के तरीक़ों के बारे में बहुत से सवाल रखती थी। वो **मसीह** के आने का इंतज़ार कर रही थी ताकि वो आकर इन बातों को साफ़-साफ़ समझाए। इसीलिए, ख़ुदावंद ईसा अल–मसीह ने उसे अपना राज़ बता दिया कि **वही मसीह हैं** — वही जिसका लोग सदियों से इंतज़ार कर रहे थे। ये बात कि खुदावंद ईसा अल–मसीह ने अपनी असली पहचान एक गुनहगार औरत पर ज़ाहिर की, इस बात का सबूत है कि **उन्हें मालूम था कि यह औरत उनके पीछे चलने के लिए तैयार है।** इस मुलाक़ात के बाद हम देखते हैं कि **ख़ुदा ने उसी औरत को इस्तेमाल किया** ताकि वो दूसरों तक खुदावंद ईसा अल–

www.taleemulkalam.org

मसीह का पैग़ाम पहुँचाए। उसने पूरे शहर में जाकर बताया कि "मुझे एक ऐसा शख़्स मिला है जिसने मेरे दिल की सारी बातें बता दीं — क्या वो मसीह नहीं हो सकता?" ख़ुदावंद ईसा अल–मसीह हमेशा उन लोगों पर **बहुत रहमत और मेहरबानी** करते थे जो गुनाह छोड़कर तौबा करने और उनके पीछे चलने के लिए तैयार होते थे।

27उसी लमहे शागिर्द पहुँच गए। उन्होंने जब देखा कि ईसा एक औरत से बात कर रहा है तो ताज्जुब किया। लेकिन किसी ने पूछने की ज़ुर्रत न की कि "आप क्या चाहते हैं?" या "आप इस औरत से क्यों बातें कर रहे हैं?"

28औरत अपना घड़ा छोड़कर शहर में चली गई और वहाँ लोगों से कहने लगी, 29"आओ, एक आदमी को देखो जिसने मुझे सब कुछ बता दिया है जो मैंने किया है। वह मसीह तो नहीं है?" 30चुनाँचे वह शहर से निकलकर ईसा के पास आए।

तो यह गुनहगार औरत, ख़ुदावंद ईसा अल–मसीह से मिलकर, वहाँ से निकली और अपने पूरे गाँव के लोगों को जाकर बताने लगी। वो कहती थी, **"आओ, एक ऐसे शख़्स को देखो जिसने मेरी ज़िंदगी की हर बात मुझे बता दी। क्या यह मसीह हो सकता है?"** उसकी गवाही सुनकर और उसके जज़्बे को देखकर, गाँव के लोग खुदावंद ईसा अल–मसीह की तरफ़ आने लगे। वो खुद देखना और समझना चाहते थे कि **ख़ुदावंद ईसा अल–मसीह असल में कौन हैं।** इसी तरह, **ख़ुदा हमसे भी यही चाहता है** कि हम अपनी ज़िंदगी की कहानी, और यह कि ख़ुदा ने हमें कैसे बदला, दूसरों को बताएँ — ताकि लोग भी दिलचस्पी लेकर खुदावंद ईसा अल–मसीह के बारे में ज़्यादा जानना चाहें।

39उस शहर के बहुत-से सामरी ईसा पर ईमान लाए। वजह यह थी कि उस औरत ने उसके बारे में यह गवाही दी थी, "उसने मुझे सब कुछ बता दिया जो मैंने किया है।" 40जब वह उसके पास आए तो उन्होंने मिन्नत की, "हमारे पास ठहरें।" चुनाँचे वह दो दिन वहाँ रहा। 41और उस की बातें सुनकर मज़ीद बहुत-से लोग ईमान लाए। 42उन्होंने औरत से कहा, "अब हम तेरी बातों की बिना पर ईमान नहीं रखते बल्कि इसलिए कि हमने ख़ुद सुन और जान लिया है कि वाक़ई दुनिया का नजातदहिंदा यही है।"

उस गुनहगार औरत की गवाही की वजह से बहुत से लोग ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पास आए, उन्होंने उनकी बातें सुनीं और ईमान लाए। उन्होंने गवाही दी कि वह "वाक़ई दुनिया का नजात-दहिंदा है।" ख़ुदा ने इस औरत को इस्तेमाल किया ताकि बहुत से लोग ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के पास आएं। इसलिए, यह गुनहगार औरत एक बहुत अच्छी मिसाल है ऐसे शख़्स की जिसे ख़ुदा ने दूसरों को शागिर्द बनाने के लिए इस्तेमाल किया। अब उसकी ज़िन्दगी के बारे में सोचो। क्या वह पढ़ी-लिखी थी? शायद ही। क्या उसे ख़ुदा के कलाम का गहरा इल्म था? नहीं, उसने कभी ख़ुदा का कलाम नहीं पढ़ा था। क्या वह इज़्ज़तदार खातून थी? नहीं, वह गुनहगार थी और उसके गाँव का हर शख़्स जानता था कि वह गुनहगार है। क्या वह बहुत अरसे से ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह की पैरूकार थी? नहीं, वह तो नई ईमान वाली थी।

अगर ख़ुदा इस गुनहगार औरत को दूसरों को शागिर्द बनाने के लिए इस्तेमाल कर सकता है, तो वह आपको भी इस्तेमाल कर सकता है। इस औरत ने बस इतना किया कि अपने दोस्तों और घरवालों के पास गई और उन्हें बताया कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के ज़रिये ख़ुदा ने उसकी ज़िन्दगी कैसे बदल दी। ख़ुदा ने उसकी कहानी को इस्तेमाल किया ताकि गाँव के दूसरे लोगों के

www.taleemulkalam.org

दिल में ख़ुदा को तलाश करने की चाह पैदा हो। अक्सर हम इस बात की कहानी को कि ख़ुदा ने आपकी ज़िन्दगी कैसे बदली, आप अपनी "गवाही" में बतायें। अपनी गवाही में बतायें कि ख़ुदा ने आपकी ज़िन्दगी में क्या किया है।

आपकी **गवाही में** तीन हिस्से होने चाहिए:

1. ईसा अल-मसीह पर ईमान लाने से पहले आपकी ज़िन्दगी कैसी थी।
2. आप ने कैसे तौबा की, और खुदावंद ईसा अल-मसीह पर कैसे ईमान लाये।
3. खुदावंद ईसा अल-मसीह ने आपकी ज़िन्दगी कैसे बदली।

करीब तीन मिनट के इस वाकिये को सुनाने के लिए तैयार करें। एक मिनट में बतायें कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह पर ईमान रखने से पहले आपकी ज़िन्दगी कैसी थी। फिर एक मिनट में बतायें कि आपने कैसे तौबा की, और ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह पर कैसे ईमान लायें। आख़िर में, एक मिनट में बतायें कि ख़ुदा ने आपकी ज़िन्दगी कैसे बदल दी। यह वाकिया अपने आप तैयार हो जायेगा।

अपनी गवाही को तैयार करने के बाद, अपने दोस्तों और घरवालों के लिए दुआ करें। दुआ करें कि ख़ुदा आपको रास्ता दिखाए कि किसका दिल आपकी गवाही सुनने के लिए खुला है। उस शख़्स के लिए दुआ करने के बाद, अपना वक़्त निकाल कर उसके साथ बैठें, और उसे बतायें कि ख़ुदा ने आपकी ज़िन्दगी में क्या क्या किया? अगर वह और जानना चाहे, तो उसे ये रिकॉर्डिंग्स सुनायें। अगर वह और सीखना चाहे, तो उसे दूसरी तालीमात सुनायें, और उसकी मदद करते रहियें कि वह ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह की पैरवी कैसे करे। इसी तरह, ख़ुदा आपको भी दूसरों को शागिर्द बनाने के लिए इस्तेमाल कर सकता है।

अब जबकि ख़ुदा ने आपकी ज़िन्दगी में काम किया है, तो सोचियें कि आप किसकी मदद करोगे कि वह ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह की पैरवी कर सके?

www.taleemulislam.org

हमसे जुड़ने के लिए आइकॉन पर क्लिक करें.....